मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस की वर्षगांठ

के अवसर पर

माननीय मुख्यमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान

का

संदेश

1 नवम्बर, 2010

बहनों और भाईयों,

आज के ही दिन वर्ष 1956 में मध्यप्रदेश का गठन हुआ था। प्रदेश के स्थापना दिवस की वर्षगांठ पर मैं आप सबका हृदय से अभिनन्दन करता हूं। प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक सौंदर्य तथा विकास की अनेकानेक संभावनाओं से भरपूर इस पवित्र धरती को हम नमन करते हैं।

विगत वर्ष 1 नवम्बर को मैंने जिस **"आओ बनाएं अपना मध्यप्रदेश"** अभियान का शुभारंभ किया था, उसकी भावना को प्रदेशवासियों ने गहराई से आत्मसात किया है। विभिन्न अंचलों में रहने वाले नागरिकों में भावनात्मक एकता मजबूत हुई है और प्रदेश के चहुंमुखी विकास में उनकी सक्रिय भागीदारी का नया अध्याय प्रारंभ हुआ है।

विकास की गति को धीमा करने वाली सामाजिक कुरीतियों, विभाजनकारी तत्वों तथा मतभेदों को भी समूल मिटाने का कार्य निरन्तर जारी है। धीरे-धीरे एक नया मध्यप्रदेश आकार ले रहा है।

हमारी यह दृढ़ मान्यता है कि सरकार और समाज के साझे प्रयासों से ही समृद्ध एवं विकसित मध्यप्रदेश का निर्माण किया जा सकता है। विकास के मुद्दे पर व्यापक सर्वानुमति बनाने तथा सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने में हमारी परिपक्व राजनैतिक एवं सामाजिक परम्पराओं का सकारात्मक प्रभाव रहा है।

प्रदेश के विकास की संभावनाओं को मूर्तरूप देने के लिए विधानसभा के विशेष सत्र में हमने 70 सुविचारित संकल्प पारित किये। यह विकसित राज्यों की अग्रिम पंक्ति में मध्यप्रदेश को सम्मिलित करने की आधारशिला है। आर्थिक विकास दर में वृद्धि अधोसंरचना में आशातीत सुधार तथा समाज के सभी वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाएं अब मध्यप्रदेश की पहचान बन गई हैं। हमारे लिए मध्यप्रदेश बनाने का अर्थ है ऐसा सर्वांगीण समावेशी विकास, जिसमें

हर व्यक्ति को उन्नति के अवसर प्राप्त हों और समाज खुशहाल बने। इस कल्पना को साकार करने के लिए यह आवश्यक है कि जो जहां है, वह वहां अपने कर्तव्यों का पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से निर्वहन करे। कर्तव्यों के पालन को अपने अधिकारों पर वरीयता दें। डॉक्टर अपने मरीजों के उपचार में, इंजीनियर गुणवत्तापूर्ण निर्माण में, शिक्षक बच्चों को पढ़ाने में, किसान अपनी खेती में, उद्यमी उत्पादन में, जनप्रतिनिधि जनकल्याण में, प्रशासक स्वच्छ प्रशासन देने में अपना सर्वश्रेष्ठ समर्पित करें। इसके साथ-साथ अपने व्यापक सामाजिक दायित्व को पूरा करने के लिए हम सबको हरियाली, पानी तथा बिजली बचाना, बच्चों को स्कूल भेजना, टीकाकरण, स्वच्छता रखना जैसे रचनात्मक कार्यों में भी अपना सक्रिय योगदान देना होगा।

एकात्म मानववाद के जनक पण्डित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था कि **''लोकतांत्रिक व्यवस्था जनता के प्रति शासन के कर्तव्यों की पूर्ति का उपकरण है, जिसकी प्रभावशीलता उत्तरदायित्व और अनुशासन में निहित है।''** इसी विचार को साकार करने के लिए हमने लोक सेवाओं

के प्रदान की गारंटी अधिनियम लागू किया है। यह शासन के प्रति आमजन के याचना भाव को लोकशक्ति में बदल देगा। मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है, जहां लोक सेवकों को और अधिक जवाबदेह तथा आम नागरिक को सशक्त बनाने वाला ऐसा कानून लागू किया गया है।

आईये, आज हम सब एक बार फिर समृद्ध और विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराएं।

प्रदेश के स्थापना दिवस पर, प्रदेशवासियों को पुनः शुभकामनाएं

जय मध्यप्रदेश, जय भारत।